शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

दांडी मार्च : स्वतंत्रता का प्रवेश द्वार

महात्मा गाँधी

कल नमक-कर कानून की सविनय अवज्ञा की जायेगी। वह इस चीज को भी सह लेगी या नहीं, यह एक अलग सवाल है। संभव है न सहे; किंतु सरकार ने हमारी इस टुकड़ी के संबंध में जो धैर्य और शांति दिखाई, उसके लिए तो वह धन्यवाद की पात्र मानी ही जायेगी।....सरकार मुझे गिरफ्तार कर ले और गुजरात या भारत के सभी प्रख्यात नेताओं को भी गिरफ्तार कर ले तो भी क्या हुआ?

इस लड़ाई की योजना ही इस विश्वास पर की गई है कि जहां सारी-की-सारी प्रजा उठ खड़ी हुई हो, जहां सारी प्रजा जाग्रत हो गई हो वहां नेता की आवश्यकता नहीं रहती।....हम तो अब जब तक सरकार थक नहीं जाती तब तक जहां-जहां नमक बनाना संभव हो, वहां-वहां जिस तरह हमारे पूर्वज नमक बनाया करते थे उस तरह घर-घर नमक बनाना है और उसे जगह-जगह बेचना है और यह काम इतनी हद तक करना है कि सरकार के गोदामों में जो नमक पड़ा हुआ है वह बेकार हो जाये। यदि देश की जनता सचमुच जाग्रत हो चुकी होगी तो नमक का कानून अब रह नहीं सकता।

इस आंदोलन के द्वारा हम अंत में जहां पहुंचना चाहते हैं, हमारा वह लक्ष्य तो बहुत दूर है। हमारी यात्रा का गंतव्य फिलहाल दांडी है किंतु अंत में तो हमें स्वतंत्रता देवी के धाम तक पहुंचना है। जब तक हमें स्वतंत्रता देवी के दर्शन नहीं होते तब तक न तो हम स्वयं चैन लेंगे और न सरकार को चैन लेने देंगे।

जिन पटेलों ने त्यागपत्र दिये हैं, उन्हें सिद्ध करना चाहिए कि ये त्यागपत्र उन्होंने सच्चे मन से दिये हैं। जब तक स्वतंत्रता की स्थापना नहीं हो जाती तब तक उन्हें इस सरकार की सेवा करना पाप समझना चाहिए।...

दांडी में किसी भी व्यक्ति का विदेशी वस्त्र पहनकर आना मुझे अच्छा नहीं लगेगा। यदि हम दांडी को तीर्थस्थल मानते हों या उसे पूर्ण स्वराज्य का दुर्ग बनाना चाहते हों तो सब लोगों को यहां खादी पहनकर ही आना चाहिए। मैं जानता हूं कि हमारे खादी भण्डारों में खादी की कमी अनुभव की जा रही है, इसलिए यदि लम्बे पनहे की साड़ी या धोती वहां न मिले तो आप लोग यहां केवल लंगोटी पहनकर ही आयें। खादी की लंगोटी पहनकर आने वाले व्यक्तियों का यहां वैसा ही सत्कार किया जायेगा जैसा कि सभ्य व्यक्तियों का होता है, किंतु यदि कोई यहां विदेशी वस्त्र पहनकर आयेगा तो मुझे दांडी की सीमा पर स्वयंसेवक नियुक्त करने पड़ेंगे और वे लोग उनके पांवों में गिर कर उनसे खादी पहनने का अनुरोध करेंगे। और उनके ऐसा करने से यदि आपको दुख हो और आप उन्हें थप्पड़ मारें तो भी वे सत्याग्रही आपके प्रहारों को सहन करेंगे।

इस कार्य के लिए दांडी का चुनाव मनुष्य का नहीं, ईश्वर का किया हुआ है। जहां अनाज न मिलता हो, जहां पानी के अभाव का डर हो, जहां हजारों लोग बहुत असुविधा सहकर ही पहुंच सकते हों, जहां पहुंचने के लिए स्टेशन से इस मीलभर चलना पड़ता हो, पैदल चलने वाले को

कीचड़ से भरी खाड़ी लांघनी पड़ती हो, ऐसी दूरवर्ती जगह को सत्याग्रह के लिए चुना गया, इसका भला इसके सिवा और क्या कारण हो सकता है ? सच तो यह है कि हमारी यह लड़ाई कष्ट सहने की ही लड़ाई है।...

दांडी में जो भी आये उसे इस भावना से आना चाहिए कि दांडी एक पवित्र स्थान है, यहां झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसी तरह का पाप नहीं करना चाहिए। यदि आप यहां सच्चे सेवकों की भावना से आयेंगे और सरकार कितना भी डर दिखाये उसका डर माने बिना नमक-कानून की सविनय अवज्ञा करेंगे तथा जो भी दूसरे काम आपसे करने को कहा जाये उसे उठा लेंगे तो आप देखें कि इसी एक सप्ताह में स्वराज्य का कानून बनने लगेगा। ईश्वर की शक्ति ऐसी महान है कि अपना यह जन्मसिद्ध अधिकार हम एक ही दिन में पा सकते हैं।...

यह लड़ाई किसी एक मनुष्य की नहीं, करोड़ों की है। यदि तीन-चार आदमी ही लड़कर स्वराज्य प्राप्त कर सकते हों तब तो देश की शासन-सत्ता भी उन तीन-चार आदमियों के हाथ में चली जायेगी। अतः स्वराज्य की इस लड़ाई में तो करोड़ों आदमियों को अपना बलिदान देकर ऐसा स्वराज्य हासिल करना है जो करोड़ों के लिए लाभदायी हो।

आप लोग अभी तक नमक लाने के लिए न गये हों तो सारे गांव के लोग मिलकर एक साथ जायें। अपनी मुट्ठी में नमक भर लें और ऐसा समझें कि आपके हाथ में 6 करोड़ रुपये का नमक है। सरकार इस नमक-कर के द्वारा हर वर्ष हमारे पास से 6 करोड़ रुपये ले जाती है। आप लोग आज से सरकारी नमक न खाने की प्रतिज्ञा कर सकते हैं।....**(सम्पूर्ण गांधी वांग्मय, भाग 49**, **5 अप्रैल**, 1930)

सावधान, झूठे त्यागपत्रों को जला डालिए। उनके बिना भी हमारा काम चल सकता है। अगर कोई यह समझता हो कि गांधी तो महात्मा है, उसने तपश्चर्या की है, सरदार उसका सहाकारी है, इसलिए दो महीने में हम सब फिर अपनी-अपनी जगह बहाल हो जाएंगे तो उसे निराशा ही हाथ लगेगी। स्वराज्य एक-दो महीने में भी मिल सकता है और उसमें पूरा जीवन भी लग सकता है। सरदार की और मेरी हड्डियां राख में मिल जायें, जो सकता है, तब भी स्वराज्य न मिले। लेकिन अब तो हम बागी हो गये हैं। और हमारी यह बगावत कोई ऐसी-वैसी नहीं है। जिस साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता, हम उसके खिलाफ बगावत कर रहे हैं। यह साम्राज्य कितना भी बड़ा क्यों न हो, असत्य का पुंज है। सत्य की फूंक-मात्र से वह बात-की-बात में उड़ जायेगा। लेकिन ऐसा सत्य हम में प्रकट हो तब न ? इसलिए आज आरंभ में ही आप सबको पुकारकर मैं हिसाब कर लेना चाहता हूं, आपको सचेत करता हूं कि हमें दगा न दीजिएगा। मुझे दगा देने का मतलब है सरदार को दगा देना, भारत माता को दगा देना है, खुद अपने आप को दगा देना है। किसी को आपके त्यागपत्र की भूख नहीं है। आनन-फानन में कार्य सिद्ध हो जायेगा, ऐसा मानकर त्यागपत्र न दें। आप ऐसा समझकर ही त्यागपत्र दें कि अब आपको मुखियागिरी या तलाटीगिरी कभी मिलने वाली नहीं है।

बहनों ने गया है कि 'स्वराज्य लेना सरल है'; है तो लेकिन तभी जब वे करके दिखायें। नमक के बारे में इतना कह कर अब मैं एक-दो वाक्यों में चरखे की बात समझा रहा हूं। आप ऐसा न समझें कि स्वराज्य नमक के पहाड़ में तो है, लेकिन सूत के तार में नहीं है। स्वराज्य तो सूत के तार में ही है। करोड़ों लोगों को सुखी बनाने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और शांत रखने वाला दूसरा कोई भी साधन नहीं है। आप सब नमक की खातिर आगे आयें या न आयें, खादी का मंत्र तो जपते ही रहें। और शराब ? इस बुराई को दूर करने के लिए तो मीठूबहन पागल बनी हुई हैं। इसकी खातिर एक पारसिन घर छोड़ दे और तब भी हम इस लत को न छोड़ें यह शर्म की बात है।

स्वराज्य की ये शर्तें रोज-रोज सुनाकर मैं तो थक गया। अब इसके बाद एक धर्म रह जाता है, जिसका पालन मैं कर लूं। मेरा काम तो आपको अपना धर्म बताना था। मैंने तो यह निश्चय कर लिया है कि हिंदुस्तान में चाहे जो हो, लेकिन मुझे सविनय अवज्ञा करके या तो अपना बलिदान कर देना है या स्वराज्य प्राप्त करना हैं। इसीलिए मैंने लोगों को आमंत्रित किया और खुद निकल पड़ा। कल जिंदा रहा तो आपके आशीर्वाद लेकर यहां से भी चल पड़ूंगा। जो तैयार हैं उन्हें मैं अपने साथ चलने को आमंत्रित करता हूं। जो लोग न आयें वे खादी पहनें और बनायें। खादी की कमी पड़ गई है। इसको बनाने वाला मैं तो चला। मैं बैठा होऊं तब तो चाहे जहां से खादी लाकर सबकी मांग पूरी कर दूं। खादी बनाने वाला मैं तो दूसरे खादी बनाने वालों को भी लेकर चला और जो बनाने वाले रह गये हैं उनमें यह मांग पूरी करने की शक्ति नहीं है। इसलिए खादी पहनना और बनाना आपका धर्म है।

मैं तो अंग्रेज, पारसी या मुसलमान किसी का सपने में बुरा नहीं चाहता। मैं तो सबका भला ही चाहने वाला हूं। इसलिए वह हमारा क्या कर सकती है ? कुछ करने की उसकी हिम्मत नहीं होती। हिम्मत होगी तो मुझे पकड़ ले तो भी जेल में पड़ा-पड़ा यही प्रार्थना करूंगा कि हे ईश्वर, इस सरकार का तू हृदय परिवर्तन कर और इसके हृदय में मनुष्य को, इन्सान को शोभा न देने वाली जो भावना पैदा हुई है उसे तू दूर कर। अर्थात् जेल में भी मैं तो इसके भले की ही कामना करूंगा। मैं नहीं चाहता कि राजा या उसके अधिकारी मार डाले जायें। इसलिए मुझ जैसे व्यक्ति को पकड़ना या जेल में डालना जरा भारी पड़ता है। राज्याधिकारी चाहें तो मुझे पकड़ सकते हैं, लेकिन मुझे पकड़े में उन्हें शर्म आती है और इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। लेकिन हमेशा ऐसा ही चलने वाला नहीं है। एक-न-एक दिन उसको मुझे पकड़ना ही है। और अगर मुझे नहीं पकड़ते तो कुछ ही दिनों में सारा हिंदुस्तान धधक उठेगा। मैं जानता हूं कि आप सब भाई-बहन अभी जेल जाने के लिए नहीं आये हैं। मेरे लिए तो पकड़े जाना या यही बैठे रहना, दोनों समान हैं। एक-न-एक दिन आप सबकी भी यही स्थिति होने वाली है।

सरकार की गति सांप-छंछूदर की-सी हो गई है। मुझे बाहर रहने देना या जेल में डालना, या दोनों बातें उसके लिए मुश्किल हैं। आपको मैं यह सामान्य धर्म बताता हूं। हिंदू, मुसलमान, पारसी तथा अन्य सब भी इस धर्म का पालन करें। हम सब ऐसा करें तो हमें गिरफ्तार करना किसी भी सत्ता की शक्ति के बाहर की बात होगी। **(सम्पूर्ण गांधी वांग्मय, भाग 49, 5 अप्रैल, 1930)**